
अफ्रीकी
दंत-कथाएँ
संजीव ठाकुर

ISBN 978-93-88359-19-1 (PB)

•

प्रकाशक

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

एन-77, पहली मंजिल, कनॉट सर्कस, नई दिल्ली-110001

Publisher

Sasta Sahitya Mandal Prakashan

N-77, First Floor, Connaught Circus, New Delhi-110 001

फोन / Phone : 23310505, 41523565

Visit us at : www.sastasahityamandal.org

E-mail : sastasahityamandal@gmail.com

शाखा : कमला सदन, पटना साइंस कॉलेज के सामने, अशोक राजपथ, पटना-800 006 (बिहार); फोन : 0612-2678025

•

प्रथम संस्करण : 2019

मूल्य : 80/-

•

आवरण सज्जा : सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

मुद्रक : सोना स्टेसनर्स, 7231, रूपनगर, दिल्ली-110007

AFRIKI DANT-KTHAYAN

by Sanjeev Thakur

Price : Rs. 80/-

प्रकाशकीय

दंत कथा किसी समाज की वाचिक परंपरा की धरोहर होती है। इसमें लोक-ज्ञान, लोक-स्मृति और लोक-विश्वास का सार निहित रहता है। समाज इस साझी धरोहर में अपना प्रतिबिंब, अपनी पहचान पाता है। दंत कथाओं में मनुष्य और अन्य प्राणियों के बीच संवाद अथवा संबंध विभिन्न रूपों में प्रकट होता है कभी प्रत्यक्ष संवाद के माध्यम से तो कभी संदेश के रूप में। प्रस्तुत संग्रह में संजीव ठाकुर ने अफ्रीकी दंत कथाओं को एकत्र किया है। पशु-पक्षियों के माध्यम से कही गई इन कथाओं में मनुष्य के लिए भी तरह-तरह की सीख निहित है। आशा है कि हिंदी पाठक समाज में इसका स्वागत होगा।

—सचिव

भूमिका

पूरी दुनिया में सदियों से लोक कथाएँ कही-सुनी जाती रही हैं। किसानों, मजदूरों, ग्रामीण स्त्रियों, अनपढ़ लोगों के द्वारा बनाई गई ये कथाएँ मौखिक परंपरा से जीवित रहकर आज तक हमारे सामने मौजूद हैं। लेकिन आज जहाँ बच्चों को लोक कथाएँ सुनाने का चलन काफी कम हो गया है, वहीं एक अच्छी बात हुई है कि विभिन्न क्षेत्रों की लोक कथाओं को लिखित रूप में लाने का काम काफी होने लगा है।

लोक कथाओं के अनेक रूप पूरी दुनिया में देखने को मिलते हैं। परी कथाएँ एवं दंत कथाएँ उनमें अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। आम तौर पर परी कथाएँ जहाँ काफी लंबी हुआ करती हैं, वहीं दंत कथाएँ थोड़ी छोटी होती हैं। दंत कथाओं में आम लोगों की कल्पना इस रूप में फलीभूत होती है कि पहाड़ से बादलों को उठते देख उन्हें किसी बुढ़िया के द्वारा सूप बनाने की कहानी सूझ जाती है तो पानी के डर से चाँद-सूरज के आकाश में रहने की कहानी भी उनके द्वारा गढ़ ली जाती है। हालाँकि इन कथाओं के पीछे कोई वैज्ञानिक आधार नहीं होता लेकिन इनसे अनपढ़-अशिक्षित आम लोगों की कल्पना की ऊँची उड़ान का पता तो चल ही जाता है ।

बचपन में अपनी परदादी और दादी से लोक कथाएँ सुन–सुनकर लोक कथाओं में मेरी रुचि काफी गहरी हो गई है। विभिन्न स्रोतों से लोक कथाओं को जमा कर उन्हें हिंदी में सरल भाषा में लिखने का काम मेरे लेखन का एक हिस्सा रहा है। इसी क्रम में यह किताब तैयार की गई है। उम्मीद है कि बच्चों के साथ–साथ बड़ों को भी ये कथाएँ पसंद आएँगी। इसे सुरुचिपूर्ण ढंग से छापने के लिए मैं 'सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन' का आभारी हूँ।

—संजीव ठाकुर

अनुक्रम

सबसे ताकतवर

एक बिल्ली थी, स्वभाव से डरपोक। वह चाहती थी कि उसकी दोस्ती सबसे ताकतवर के साथ हो जाए जिससे उसे किसी से डर नहीं लगे। उसकी नजर में शेर सबसे ताकतवर जानवर था। वह शेर के पास चली गई। शेर से दोस्ती गाँठकर उसके साथ रहने लगी। काफी दिनों के बाद जंगल में घूमते हुए एक हाथी शेर के सामने आ गया। शेर उससे लड़ने लगा। अंततः हाथी ने शेर को मार दिया। बिल्ली सोचने लगी, हाथी तो शेर से भी अधिक ताकतवर है। क्यों न वह हाथी से ही दोस्ती कर ले? हाथी से दोस्ती कर वह उसके साथ रहने लगी।

बिल्ली हाथी के साथ बहुत दिनों तक रही। एक दिन एक शिकारी कहीं से आया और हाथी को मार डाला। बिल्ली को हाथी के मरने का दुख तो हुआ लेकिन उस दिन उसे लगा कि आदमी हाथी से भी ज्यादा ताकतवर होता है। वह आदमी के साथ उसके घर चली गई।

घर पहुँचने पर शिकारी की पत्नी बाहर निकली और शिकारी से उसकी बंदूक ले ली। इस पर बिल्ली सोचने लगी कि यह औरत तो शिकारी से भी अधिक ताकतवर है? इसने शिकारी की बंदूक ले ली, शिकारी कुछ बोल भी नहीं पाया? बिल्ली ने तय किया कि वह इस औरत के साथ ही रहेगी। वह उस औरत के पीछे-पीछे रसोई में चली गई।



औरतों को सबसे ताकतवर मानकर ही बिल्लियाँ रसोई में रहती चली आ रही हैं !

तोड़ी सियार से दोस्ती

सियार और कुत्ते में गहरी दोस्ती थी। दोनों जंगल में साथ रहते, मिलकर शिकार करते। एक दिन उन्हें कोई शिकार नहीं मिला। दोनों को भूखे पेट ही सोना था। रात ठंड भी कुछ ज्यादा थी। भूखे पेट उन्हें नींद नहीं आ रही थी। अचानक कुत्ते को कुछ दूरी पर कोई लाल चीज चमकती दिखाई पड़ी। सियार ने उसे बताया कि 'वह आग है। यहाँ से कुछ ही दूरी पर एक गाँव है जहाँ लोग आग जलाकर जाड़ा दूर भगाते हैं।' कुत्ते ने सियार से थोड़ी आग लाने को कहा। आग से कम-से-कम ठंड तो दूर भाग जाती ?...लेकिन सियार गाँव जाने को तैयार नहीं हुआ। उसने साफ-साफ कह दिया—''तुम्हें जाना है तो जाओ! मैं नहीं जा पाऊँगा।''

कुत्ते को आदमी से बहुत डर लगता था लेकिन उसने सोचा कि 'आग के आस-पास कुछ हड्डियाँ भी फेंकी हो सकती हैं। वहाँ जाने पर भूख और ठंड दोनों समस्याओं का अंत हो सकता है।' वह चल पड़ा। जब वह जलती हुई आग के पास पहुँचा, एक आदमी घर से बाहर निकल आया। उसे देखकर कुत्ते को डर लगा। उसने आदमी से निवेदन किया—''मुझे बहुत ठंड लग रही है। मैं थोड़ी देर आग के पास बैठकर चला जाऊँगा!''

आदमी ने कहा—''ठीक है, बैठो। लेकिन जैसे ही तुम गर्म हो जाओ, यहाँ से चले जाना!''



कुत्ता आग के पास बैठ गया। वहीं पास में कुछ हड्डियाँ बिखरी पड़ी थीं, वह उन्हें खाने लगा।

कुछ देर में आदमी फिर से बाहर आया और कुत्ते को जाने को कहा। कुत्ता बोला—''अभी मुझे ठंड लग ही रही है। थोड़ी देर और बैठ जाने दीजिए न?''

कुछ देर बाद फिर आदमी बाहर निकला। इस बार कुत्ते ने कहा—''हाँ, अब मैं गर्म हो गया हूँ लेकिन मैं जंगल जाना नहीं चाहता, वहाँ मैं अकसर भूखा रहता हूँ। ठंड से भी परेशान रहता हूँ। आप मुझे यहीं नहीं रहने दे सकते? ...मैं चिड़िया और जानवरों के शिकार में आपकी मदद करूँगा। आप मुझे यहीं रहने दीजिए प्लीज!''

आदमी ने सोचा, कुत्ते के रहने से फायदा ही है। उसने कुत्ते को रहने की अनुमति दे दी।

तभी से कुत्ते आदमी के साथ रह रहे हैं और उधर सियार कुत्ते को पुकारते चले आ रहे हैं—''काम हुआ? हुआ? हुआ?...''

पालतू

एक समय ऐसा था जब कुछ पक्षी और जानवर आकाश में रहा करते थे। कुत्ता और मुर्गी भी वहीं रहा करते थे।

एक दिन जब काफी ठंड पड़ रही थी और वर्षा भी हो रही थी, पक्षियों ने कुत्ते से धरती पर जाने और वहाँ से आग लाने को कहा। आग लाकर वे आकाश को थोड़ा गर्म करना चाहते थे।

कुत्ता नीचे गया। नीचे एक घर के बाहर उसे कुछ हड्डियाँ बिखरी हुई दिखाई दीं। आग और पक्षियों को भूलकर वह हड्डियाँ खाने लगा।

उधर पक्षी प्रतीक्षा करते रहे, कुत्ता वापस नहीं आया। कुत्ते ने धरती पर रहने का निर्णय ले लिया!

तब जाकर पक्षियों ने मुर्गी से कहा—"जाओ! जाकर धरती से आग ले आओ?"

मुर्गी नीचे गई। एक घर के बाहर उसे कुछ बीज बिखरे दिखाई दिए। सब कुछ भूलकर वह बीज खाने लगी। बीज का स्वाद उसे इतना अच्छा लगा कि उसने वापस न जाकर धरती पर रहने का निर्णय ही ले लिया।

बढ़िया भोजन के लिए अपने मित्रों को ठंड में ठिठुड़ते छोड़कर कुत्ते और मुर्गी ने ऐसा काम किया कि इस वजह से जानवर और पक्षी उन्हें नापसंद करने लगे।



अब आप यह भी समझ गए होंगे कि कुत्ता और मुर्गी घरेलू जानवर कैसे बन गए?

उधार चुकता

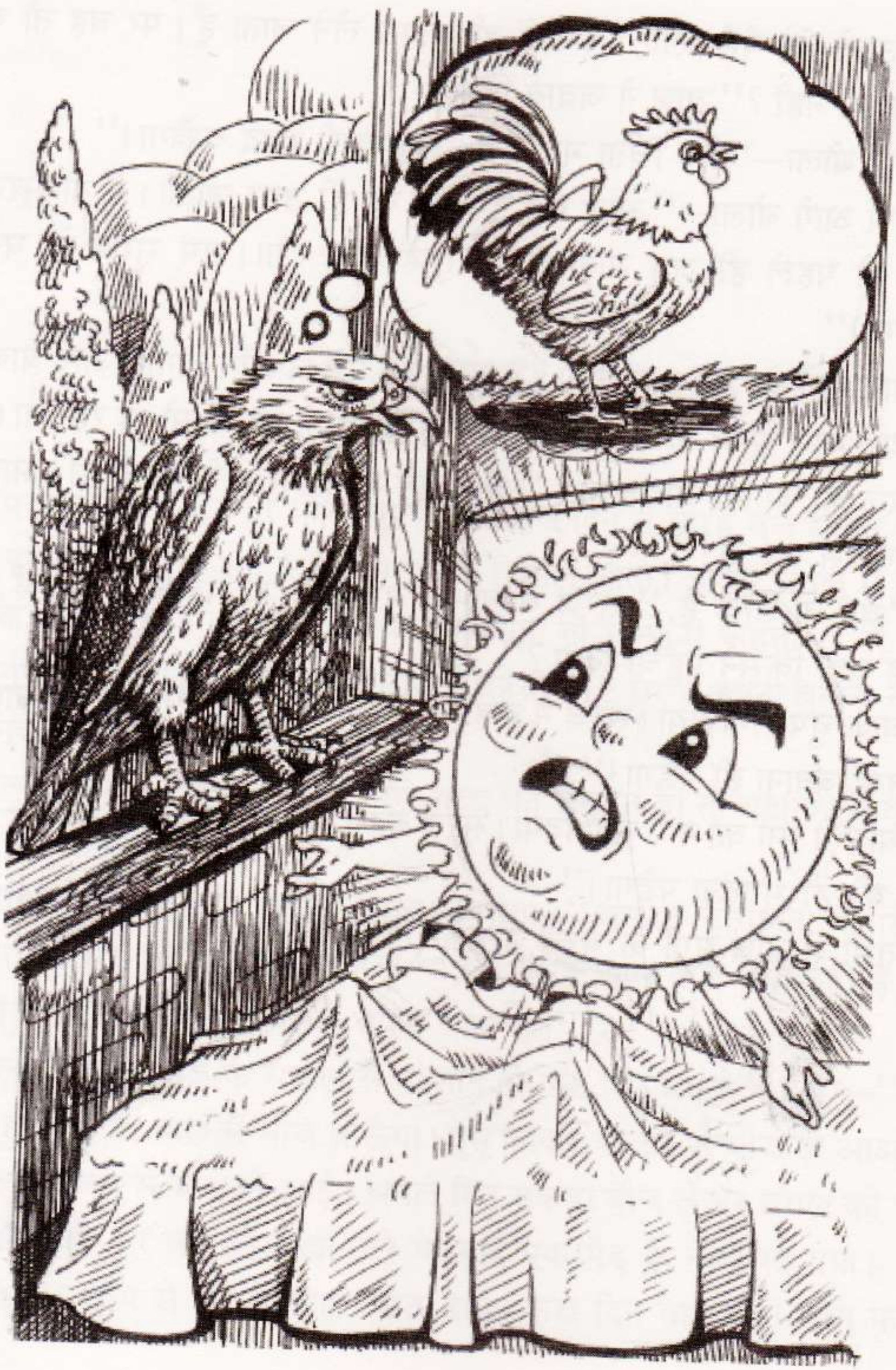
एक बार सूरज तंगी में था। उसने बाज से कुछ रुपए उधार लिए और बहुत जल्द उन्हें वापस करने की बात कही। लेकिन हफ्ता-दर-हफ्ता बीतता गया, सूरज पैसे लौटाने का नाम ही नहीं ले रहा था। बाज ने सूरज को याद दिलाना जरूरी समझा। वह सूरज के घर चला गया। तब तक सूरज अपने घर से आकाश को निकल गया था। बाज सूरज के पास गया और बोला—"तुमने मेरे पैसे लिए थे, भूल गए क्या?"

"अरे! नहीं, मुझे बिलकुल याद है। मैं तो अभी ही तुम्हें पैसे लौटा देता लेकिन मेरे पैसे तो घर में हैं। जब मैं घर में रहूँ, तुम आ जाना, तुम्हारे पैसे वापस कर दूँगा।" सूरज ने कहा।

बाज निश्चिंत होकर घर गया। अगले दिन सुबह-सुबह वह सूरज के घर पहुँच गया। लेकिन तब तक देर हो चुकी थी। सूरज घर से निकल चुका था।

बाज कई बार सूरज के घर गया, हर बार उसके जाने से पहले सूरज अपने घर से निकल चुका होता था!

एक दिन बाज निराश होकर लौट रहा था कि उसका दोस्त मुर्गा मिल गया। मुर्गे ने पूछा—"तुम हर रोज सूरज के घर क्यों जाते हो?"



"उसने मेरे पैसे लिए हैं। उन्हें ही वापस लेने जाता हूँ। पर वह तो कभी मिलता ही नहीं?" बाज ने जवाब दिया।

मुर्गा बोला—"तुम चिंता मत करो। मैं तुम्हारी मदद करूँगा।"

मुर्गा आगे बोला—"आज रात तुम मेरे घर ही ठहर जाओ। मैं तो सूरज के जगने से पहले ही जग जाता हूँ, मैं तुम्हें उठा दूँगा। तुम सूरज के घर जा पहुँचना।"

बाज मुर्गे के घर ठहर गया। सुबह हुई। मुर्गे ने बाँग लगाई और बाज को जगाया। बाज सूरज के घर पहुँच गया। सूरज अपने घर में सो ही रहा था। बाज ने सूरज को जगाया और कहा—"आज तुम अपने घर में मिल गए हो! आज मेरे पैसे वापस कर दो!"

"वह तो ठीक है," सूरज बोला—"मगर यह तो बताओ कि तुम्हें इतनी सुबह यहाँ किसने पहुँचा दिया?"

बाज चुप लगा गया। सूरज ने कहा—"अगर तुम अपने पैसे वापस चाहते हो तो तुम्हें बताना ही पड़ेगा!"

बाज ने मुर्गे का नाम बता दिया। सूरज बहुत खफा हुआ। उसने कहा—"अब मुर्गे को ही भुगतना पड़ेगा।"

तभी से बाज मुर्गों के बच्चे उठाकर ले जाने लगे।

अँधेरे में

एक मकड़ा था—बहुत ही सुस्त, कामचोर! रोज दिन में बारह बजे सोकर उठता और नाश्ता कर खेत जाने के बहाने घर से निकल जाता। जाकर जंगल में किसी पेड़ के नीचे आराम करता और लौटकर आता तो पत्नी से कहता—''मैं बहुत थक गया हूँ। तुम औरतें कितने आराम में रहती हो? घर में खाना बनाना बस्स! हम मर्दों को कितना खटना पड़ता है?''

पत्नी कहती—''तुम्हें खेत में मेरी मदद की जरूरत हो तो बताना। मैं तुम्हारे साथ आ जाऊँगी।''

लेकिन मकड़ा उसे टालता रहता। कहता, ''जरूरत होगी तो बताऊँगा। मकड़ा यह राज नहीं खोलना चाहता था कि उसके पास कोई खेत नहीं है और वह रोज मटरगश्ती करने घर से बाहर जाता है।''

पत्नी के रोज-रोज के सवाल से परेशान हो एक दिन मकड़े ने कहा—''खेत तैयार हो गया है, कल मैं बीज बोऊँगा। तुम जाकर बाजार से बीज ले आओ!''

पत्नी बाजार से बीज ले आई। अगले दिन मकड़ा बीज लेकर जंगल को चला गया और जी-भर कर बीज खा लेने के बाद एक पेड़ के नीचे सो गया।

मकड़ा नियम से घर से बाहर जाता रहा। कुछ दिन बाद सभी लोग फसल

काटकर घर लाने लगे लेकिन मकड़ा खाली हाथ ही घर आता रहा। पत्नी इस बात पर भी टोक-टाक करती। मकड़े की समझ में नहीं आता कि वह फसल लाए तो कहाँ से ?...

आखिर उसे एक उपाय सूझा। उसने जमींदार के खेत से फसल चुराने का निश्चय किया। रात वह जमींदार के खेत में घुसा और एक बोझा फसल चुरा लिया। उस फसल को जंगल में छुपाकर वह घर आया।

अगले दिन मकड़ा पत्नी से बोला—"मैं आज फसल लेकर आऊँगा। रात में तुम बढ़िया खाना बनाना।"

शाम को वह चुराए हुए फसल के साथ घर आया। पत्नी बहुत खुश हुई। उसे बढ़िया खाना खिलाया।

रात मकड़ा फिर फसल चुराने चला गया और अगले दिन फिर से फसल लेकर घर आया।

उधर जमींदार के नौकर ने देखा कि कोई चोर फसल चुरा कर ले जा रहा है तो उसने चोर को पकड़ने की योजना बनाई। वह जंगल गया और रबड़ के पौधे का रस ले आया। उस रस से उसने एक रबड़ का आदमी बना दिया और खेत में खड़ा कर दिया। रात में मकड़ा खेत में आया। एक आदमी को खड़ा देखकर उसने पूछा—"तुम कौन हो ? यहाँ क्या कर रहे हो ?" आदमी ने कोई जवाब नहीं दिया। कई बार सवाल पूछने पर जब उस आदमी ने जवाब नहीं दिया तब मकड़े को गुस्सा आ गया। उसने अपना हाथ चला दिया। उसका हाथ रबड़ के आदमी के सिर से चिपक गया।

"छोड़ो! मुझे छोड़ते क्यों नहीं ?" कहने पर भी आदमी ने मकड़े को नहीं छोड़ा तो उसने अपना दूसरा हाथ भी चला दिया। उसका दूसरा हाथ भी रबड़ के आदमी के सिर से चिपक गया। अब मकड़ा समझ गया कि यह क्या बला है!

सुबह जमींदार का नौकर आया। उसने चोर को पकड़ा और जमींदार के



सामने ले गया। मकड़ा बहुत शर्मिंदा हुआ। शर्मिंदगी के कारण उसने बोलना छोड़ दिया और जाकर अँधेरी जगह में रहने लगा।

तब से कई युग बीत गए। मकड़े अँधेरी जगहों में ही रहते चले आ रहे हैं।

वह फिर नहीं आई

एक बुढ़िया थी। वह बाजार में सूप बेचती थी। उसके चिकन सूप जैसा स्वाद किसी और के सूप में नहीं था। लोग उसका सूप खरीदते थे मगर उन्हें उस बुढ़िया के नाम-धाम का कुछ पता नहीं था।

सुबह होते ही बुढ़िया अपने सिर पर एक बड़ा काला बर्तन लिए आ जाती, एक पेड़ के नीचे बैठ जाती और सूप बेचती। जल्दी ही उसका सूप बिक जाता, वह घर चल जाती।

उसी बाजार में कलारी नाम का एक छोटा लड़का रहता था। उसे भी बुढ़िया का सूप खूब पसंद था। वह यह भी जानना चाहता था कि बुढ़िया कहाँ से आती है? एक दिन जब बुढ़िया अपना खाली बर्तन लेकर घर जाने लगी, कलारी उसका पीछा करने लगा। बुढ़िया एक ऊँचे पहाड़ पर चढ़ गई। कलारी भी उसके पीछे पहाड़ पर चढ़ गया। चलते-चलते शाम हो गई। कलारी को डर भी लगने लगा, लेकिन वह बुढ़िया के पीछे-पीछे चलता ही रहा।

अंततः बुढ़िया एक झोपड़ी में घुस गई। वहाँ एक बहुत बड़ा बर्तन रखा था। वह खाली था। बुढ़िया झोपड़ी से बाहर आई तो कलारी छुप गया। बुढ़िया उस बर्तन के पास गई और गाना गाने लगी—''ओ जादुई बर्तन! तुम मेरे लिए



गर्म-गर्म सूप बनाओ, चिकन का सूप बनाओ, मैं उसे बेचूँगी, लोग उसे खरीदेंगे... !''

बहुत जल्दी सूप तैयार हो गया। बर्तन से भाप निकलने लगी। सूप की गंध भी बड़ी अच्छी थी। कलारी भूखा भी था, इसलिए बुढ़िया के झोपड़ी में जाते ही वह बर्तन के पास गया। वह बर्तन से चिकन का एक टुकड़ा निकालने ही वाला था कि बुढ़िया आ गई। बुढ़िया ने उसे देख लिया और उस पर चिल्लाई। कलारी वहाँ से भागा। बुढ़िया उसका पीछा करने लगी लेकिन उसे नहीं पकड़ पाई।

कलारी भागता-भागता अपने घर पहुँचा। उसने सारी बातें अपने माता-पिता को बता दीं। उन्होंने पहाड़ की ओर देखा तो सचमुच वहाँ से भाप उठ रही थी।

उस दिन के बाद उस बुढ़िया ने बाजार आकर सूप बेचना बंद कर दिया। कोई उसे देखने पहाड़ पर भी नहीं जा सका। सभी उससे डरे हुए थे।

लेकिन अब भी लोग पहाड़ के ऊपर बादल को देखते हैं तो कहते हैं—''देखो, उस जादुई बर्तन से भाप निकल रही है।''

बहुत बुरा! बहुत बुरा!

बहुत समय पहले गिरगिट और कुत्ते में दोस्ती थी। लेकिन कुत्ता कभी-कभी गिरगिट का साथ छोड़कर आदमी के साथ चला जाता था।

एक दिन गिरगिट ने कुत्ते से पूछा—"तुम कभी-कभी आदमी के साथ क्यों चले जाते हो?"

कुत्ते ने जवाब दिया—"आदमी और मैं दोस्त हैं। आदमी के साथ मैं शिकार करने जाता हूँ। मैं उसे शिकार में मदद करता हूँ। शिकार से हम मांस लेकर आते हैं। आकर हम मांस खाते हैं।"

एक बार आदमी और कुत्ता शिकार करने गए। दोनों ने मिलकर एक हिरण को मारा और उसे लेकर आदमी के घर आए।

गिरगिट ने उन्हें आते हुए देखा और उनके पीछे-पीछे आदमी के घर चला गया। उसने देखा कि आदमी ने घर पर मांस पकाया और खाने बैठ गया। मांस की उम्मीद में कुत्ता वहाँ आकर बैठ गया। आदमी को गुस्सा आ गया। उसने एक बड़ी-सी छड़ी ले ली और उससे कुत्ते के सिर पर प्रहार कर दिया। बेचारा कुत्ता चिल्लाता हुआ वहाँ से भाग गया।

यह सारा नाटक देखकर गिरगिट वहाँ से भाग पड़ा। भागता-भागता जंगल



पहुँच गया। वहाँ वह रुका और अपना सिर हिलाने लगा—"वह तो बहुत बुरा हुआ! कुत्ता कहता था कि वह उस आदमी का दोस्त है, वह उसे शिकार में मदद करता है? लेकिन आदमी तो उस बेचारे को डंडे से पीटता है? वह आदमी तो अच्छा नहीं है। मैं कभी भी आदमी के पास नहीं रहूँगा। अब मैं जंगल में ही रहूँगा।"

तभी से गिरगिट आदमी से दूर जंगलों में रहने लगे। आदमी की हरकत के बारे में जब भी वे सोचते हैं, उसके सिर हिलने लगते हैं, जैसे वे कह रहे हों—"बहुत बुरा! बहुत बुरा! बहुत बुरा!"

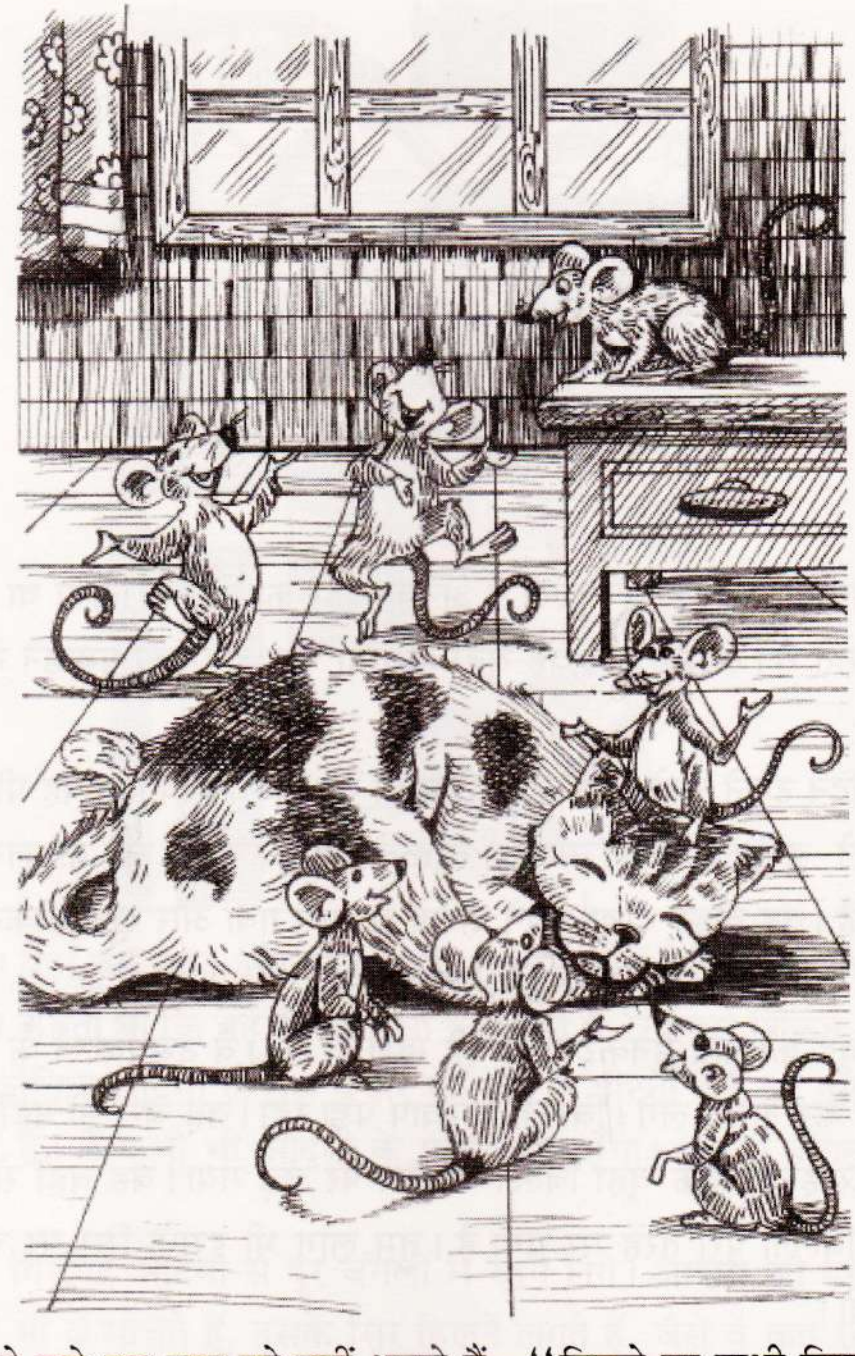
बिल्ले पर विश्वास ?

अपनी जवानी के दिनों में बिल्ले ने अनेक चूहों का शिकार किया था। चूहे उसे देख घबराते थे। लेकिन जब वह बूढ़ा हो गया, वह चूहों को पकड़ने में असमर्थ हो गया।

एक दिन उसने चूहों से चालबाजी करने का निश्चय किया। वह पीठ के बल बिना हिले-डुले लेट गया। उसे इस तरह लेटे देखकर एक चूहे को लगा कि वह मर गया है। वह दौड़ा-दौड़ा अपने दोस्तों के पास गया और खुश होकर बोला—''बिल्ला मर गया। चलो हम लोग खुशी मनाएँ!''

उस चूहे की बात सुनकर सभी चूहे खुश हो गए। वे उस बिल्ले के चारों ओर घूम-घूम कर नाचने लगे। बिल्ला चुपचाप पड़ा रहा। वह जरा भी नहीं हिल रहा था। निडर होकर एक चूहा बिल्ले के सिर पर चढ़ गया। वह वहीं से बोला—''देखो, बिल्ला पूरी तरह मर गया है। तुम लोग भी इसके सिर पर चढ़ जाओ और नाचो!''

तभी अचानक बिल्ला ऊपर उछला और अपने सिर पर नाच रहे चूहे को पकड़ लिया। बाकी चूहे अपनी जान बचाकर वहाँ से भाग पड़े।



तभी से चूहे इस बात को नहीं भूलते हैं—''बिल्ले पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिए!''

मुझे कहाँ जाना चाहिए?

एक समय एक मेंढ़क था। उसकी दो बीवियाँ थीं। पहली बीवी नडुंबी में रहती थी, दूसरी नडाला में। वह खुद इन दोनों जगहों के बीच एक छोटी-सी जगह में रहता था।

एक दिन एक छोटा मेंढ़क उसके पास आया और बोला—"तुम्हारी पहली बीवी तुम्हें नडुंबी बुला रही है। उसने तुम्हारे लिए बढ़िया खीर बनाई है। खीर अभी बिलकुल गर्म है, तुम जल्दी चलो।"

मेंढ़क को खीर बहुत पसंद थी। अपनी पहली पत्नी का संवाद सुनते ही वह तुरंत नडुंबी जाने को तैयार हो गया। लेकिन उसी समय एक दूसरा छोटा मेंढ़क आ पहुँचा और उससे बोला—"तुम्हारी दूसरी बीवी तुम्हारे लिए गर्मागर्म खीर बनाकर तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है। तुम जल्दी से नडाला चलो! उसने तुम्हें फौरन बुलाया है।"

मेंढ़क बैठ गया और सोचने लगा—"अगर मैं पहली बीवी के पास जाऊँगा तो दूसरी नाराज हो जाएगी और अगर दूसरी के पास जाऊँगा तो पहली नाराज हो जाएगी। ओह! दो बीवियों का होना कितना बुरा है? उस पर दोनों का एक साथ खीर बनाना!... मैं कहाँ जाऊँ?"



बहुत देर सोचने के बाद भी जब उसकी समझ में नहीं आया कि वह कहाँ जाए तो वह अपने ही घर रह गया और रोने-चिल्लाने लगा—"मैं कहाँ जाऊँ? मुझे कहाँ जाना चाहिए?"

अब भी आप मेंढ़कों को टर्र...टर्र...टर्र करते सुनकर समझ सकते हैं कि वे पूछ रहे हैं—"मुझे कहाँ जाना चाहिए? मुझे कहाँ जाना चाहिए?"

घर में अजगर

बहुत समय पहले किसी रोज नायिरे समुदाय के लोग शिकार करने गए। वे जंगल-झाड़ में लगातार भटकते रहे लेकिन उन्हें कुछ भी नहीं मिला। भटकते-भटकते रात हो गई। वे घर से बहुत दूर चले गए थे। लौटना मुमकिन नहीं था। समुदाय के प्रमुख ने कहा—''हमें झाड़ियों के बीच ही सोना होगा। चलो हम कोई अच्छी-सी जगह ढूँढ़ लें!''

शिकारियों ने बड़े-बड़े पेड़ों से घिरी एक जगह ढूँढ़ निकाली और वे घास पर सो गए। सोने से पहले उन्होंने आग भी नहीं जलाई और साथ लाए कुछेक बादाम से अपनी भूख मिटाई।

खूब थके होने के कारण वे खूब गहरी नींद में सो गए। उन्हें आस-पास की कोई आवाज सुनाई नहीं दे रही थी। वे अपनी ओर आते अपने दुश्मनों की चाप भी नहीं सुन पाए।

तभी पेड़ के ऊपर से कोई भारी चीज नीचे सो रहे एक युवा शिकारी के सिर पर जा गिरी। युवा शिकारी की नींद खुल गई। वह उछलकर चिल्ला पड़ा— ''एक भारी अजगर मेरे सिर पर गिर गया।''

उसके चिल्लाने से बाकी लोग भी जग गए। उठते ही उन्होंने देखा कि दुश्मन



उन्हें घेरे हुए हैं। दोनों ओर से लड़ाई होने लगी। जल्द ही दुश्मन भाग गए। लड़ाई खत्म हो गई।

अब सभी लोग अपने प्रमुख के पास गए और उन्हें लड़ाई के बारे में बताने लगे।

प्रमुख ने उस युवा शिकारी से पूछा—''तुम कैसे उछल पड़े?''

युवा शिकारी ने कहा—''एक अजगर की वजह से! वह मेरे सिर पर गिर गया था। लेकिन उसने मेरा कोई नुकसान नहीं किया।''

प्रमुख बोला—''आज से हमारे समुदाय के लोग अजगर को कभी नहीं मारेंगे। अजगर ने हमारी जिंदगी बचाई है। वह हमारे लिए पवित्र जानवर होगा।''

आज भी नायिरे समुदाय के लोग अजगरों से प्यार करते हैं। अगर आप बरसात के मौसम में उनके घर जाएँगे, आप वहाँ अजगर देख पाएँगे। अजगर कभी किसी को नुकसान नहीं पहुँचाते। यहाँ तक कि वे किसी चूजे तक को नहीं खाते।

मैंने नहीं खाया

एक बार की बात है। एक चील का बच्चा बहुत बीमार था। चील की बहन ने उसे बताया कि वह एक अच्छे डॉक्टर के बारे में जानती है जो उसके बच्चे को ठीक कर सकता है। उसने कहा, "यहाँ सबसे अच्छा डॉक्टर मकड़ा है। मैं जाकर उसे यहाँ आने को कहती हूँ।"

चील की बहन डॉक्टर मकड़ा के पास गई और बोली—"मेरी बहन का बच्चा बीमार है। क्या आप जाकर उसे देख पाएँगे?"

मकड़ा बोला—"मैं जा तो सकता हूँ लेकिन मुझे डर लगता है। रास्ते में एक मुर्गी रहती है। वह मुझे खा जाएगी!"

चील की बहन बोली—"नहीं, नहीं, वह आपको नहीं खाएगी। आप वहाँ आ जाइएगा!"

चील की बहन के जाने के बाद मकड़ा दवा की शीशियाँ तैयार करने लगा। फिर सबको एक थैले में भरकर वह चील के घर जाने को तैयार हो गया। जाने से पहले उसने एक पत्र लिखकर दवाई वाले थैले में रख लिया।

रास्ते में उसे मुर्गी मिल ही गई। उसे देखते ही वह छुप गया। लेकिन मुर्गी ने उसे देख लिया और पकड़कर अपने चूजों को खाने को दे दिया।



उधर बहुत देर प्रतीक्षा करने पर भी जब मकड़ा चील के घर नहीं पहुँचा तब चील उसे देखने निकल पड़ी। रास्ते में उसे दवा की शीशियों वाला थैला दिखाई दे गया। उस थैले से उसे वह पत्र भी मिला जो मकड़े ने लिख छोड़ा था। उसमें लिखा था—"चील! मैं तुम्हारे घर आ रहा था कि मुर्गी ने मुझे खा लिया।"

पत्र पढ़कर चील वापस अपने घर गई। दवा के बिना उसका बच्चा मर गया। उसे मुर्गी पर बहुत गुस्सा आया। उसने बदला लेने का निर्णय लिया।

तभी से चील मुर्गी के चूजों को खाने लगी।

और तभी से कोई किसी मुर्गी को पकड़ने लगता है तो वह चिल्ला पड़ती है—"मैं वह नहीं हूँ। मैं वह नहीं हूँ।" मानो वह कहना चाह रही हो—"मैंने उस मकड़े को नहीं खाया, मैंने नहीं खाया, मैंने नहीं खाया!"

परंपरा के लिए

बहुत समय पहले दागोम्बा समुदाय का एक सरदार था। उसको एक बेटा था। वह अपने बेटे को इतना प्यार करता था कि अगर रात को वह पास नहीं होता तो उसे नींद ही नहीं आती थी।

एक दिन की बात है। सरदार अपने घर के आगे बड़े पेड़ के नीचे बैठा था। समुदाय के लोग भी उसके चारों ओर बैठे थे। मौसम खुशनुमा था। आकाश भी साफ था। ढोल बज रहे थे, बच्चे नाच-गा रहे थे।

सरदार ने कहा—"जिंदगी अच्छी है।"

सरदार की बात से समुदाय के लोग सहमत थे। सहमत होने पर उनमें ताली बजाने का रिवाज था। उन्होंने ताली बजाई।

उसी समय सरदार की पत्नी वहाँ आई और बोली—"सरदार! हमारे बेटे के सोने का समय हो गया है।"

सरदार बोला—"लेकिन वह यहाँ कहाँ है? वह तो तुम्हारे ही साथ घर के अंदर था?"

"वह आपके पास नहीं है?" सरदार की पत्नी ने पूछा।

सरदार को गुस्सा आ गया। वह बोला—"मैंने कहा न, वह यहाँ नहीं है? जाओ, अंदर जाकर देखो।"

सरदार की पत्नी ने दुखी होकर कहा—"मैंने कहा न, वह घर में नहीं है।"

सरदार उठकर खड़ा हो गया। उसने डाँट कर नाच-गान बंद करवा दिया और ढोलकियों को आदेश दिया—"जाओ, चारों तरफ मुनादी कर दो—जिसे भी बच्चा मिले, वह उसे मेरे पास ले आए!"

ढोलकिए जाकर ऐलान कर आए—"सरदार का बेटा खो गया है। जिसे भी मिले, वह उसे लेकर सरदार के पास आ जाए!"

कुछ लोग बच्चा ढूँढ़ने निकल पड़े। वे निराश होकर लौट आए तब सरदार ने कहा—"सभी लोग उसे ढूँढ़ने में लग जाएँ!"

सभी लोग बच्चे को ढूँढ़ने में लग गए। काफी देर बाद एक आदमी चिल्लाया—"बच्चा यहाँ है!"

सरदार उस आदमी के पास गया। उसने देखा कि बच्चा एक पेड़ के नीचे घास पर गहरी नींद में सोया पड़ा है।

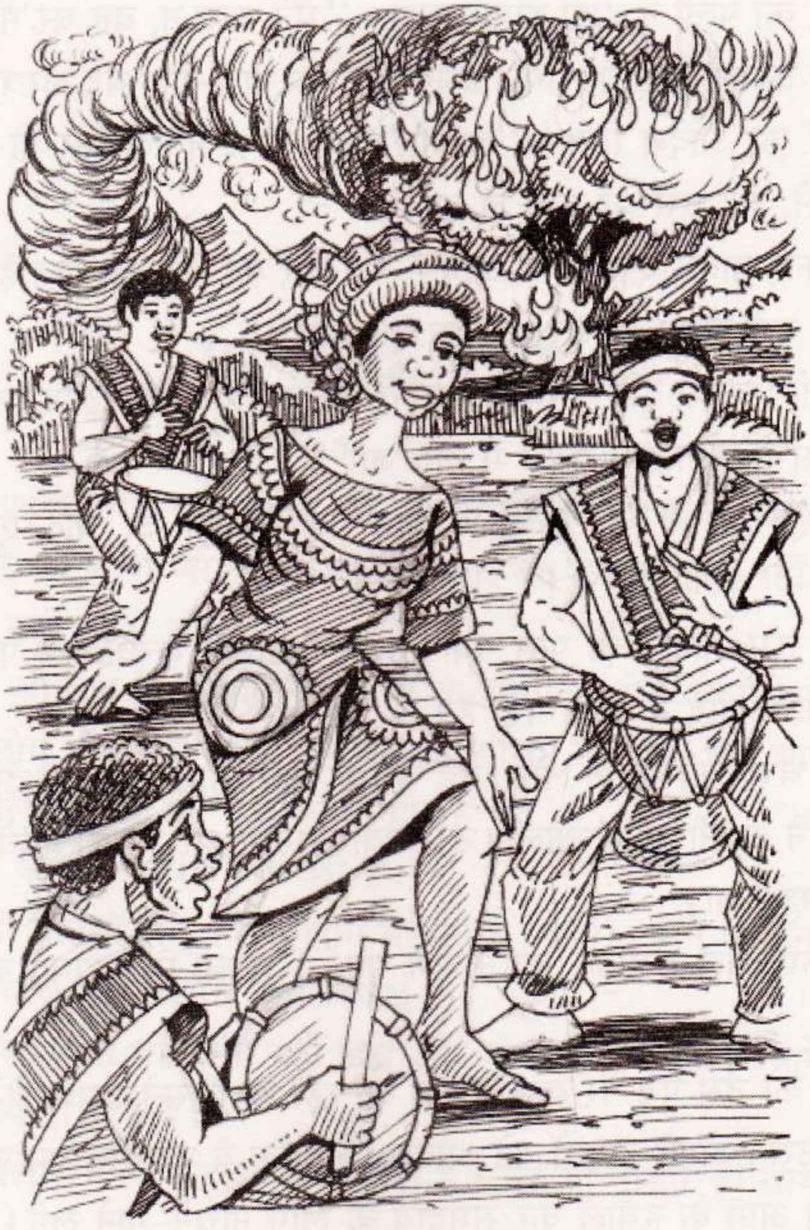
सरदार बच्चे को जगाने लगा। वह जग ही नहीं रहा था। काफी देर जगाने के बाद बच्चे ने अपनी आँखें खोलीं। उसे लेकर सरदार घर आया। बच्चे को पाकर वह बहुत खुश था।

ढोलकिए ढोल बजाकर कहने लग गए—"बच्चा मिल गया, बच्चा मिल गया।"

सरदार को उस पेड़ पर बहुत गुस्सा आ रहा था जिसने उसके बेटे को छुपा रखा था। उसने अपने नौकरों को आदेश दिया कि वे उस पेड़ को जला दें।

पेड़ को आग के हवाले कर समुदाय के लोग नाचने-गाने लगे।

तभी से प्रत्येक वर्ष जुलाई के महीने में दागोम्बा लोग 'अग्नि-उत्सव' मनाते हैं। वे लोग अपने-अपने घर से मशाल लेकर निकलते हैं और नाच-गान के बीच पेड़ को जलाते हैं।



आज भी वे इस उत्सव को मनाते हैं लेकिन वे पूरे पेड़ को नहीं जलाते, परंपरा का निर्वाह करने के लिए बस पेड़ की दो शाखाओं को जला देते हैं।

यादों में

बहुत समय पहले अफ्रीका में एक शिकारी रहता था। उसका नाम ओगालुस्सा था। एक बार वह शिकार करने जंगल गया और उसकी बीवी अपने पाँच बच्चों के साथ खेत पर काम करने चली गई। शाम को औरत अपने बच्चों के साथ घर वापस आ गई लेकिन ओगालुस्सा वापस नहीं आया। रात हो गई, फिर भी वह नहीं आया। भोर हो गई और फिर अगली रात! फिर भी वह नहीं आया। सप्ताह बीत गया, महीना बीत गया, ओगालुस्सा वापस नहीं आया। इस बीच औरत ने अपने छठे बेटे को जन्म दिया। उसने उसका नाम पुली रखा।

औरत हर रोज काम करने खेत जाती रही। उसके बेटे कभी उसकी मदद कर देते, कभी वे शिकार करने जंगल चले जाते।

थोड़े समय बाद परिवार के लोग ओगालुस्सा को भूल गए।

परिवार का सबसे छोटा सदस्य पुली अभी बोल नहीं सकता था। उसने बस चलना सीखा था। लेकिन एक दिन अचानक उसने अपना मुँह खोला और बोलना शुरू कर दिया। उसने जो शब्द सबसे पहले मुँह से निकाले, वे थे—''मेरे पिता कहाँ हैं ?''

उसकी बात सुनकर सबसे बड़ा लड़का भी बोल पड़ा—''हमारे पिता कहाँ हैं ?''



बड़े भाई की बात सुनकर दूसरा भाई बोला—''हमें जंगल जाना चाहिए और उन्हें ढूँढ़ना चाहिए।''

तीसरा भाई बोला—''मुझे पता है, वे किस रास्ते गए थे?''

''हमें उस रास्ते पर चलना चाहिए। मुझे विश्वास है, वे मिल जाएँगे।'' चौथा भाई बोला।

''हमें अभी तुरंत चलना चाहिए।'' पाँचवाँ भाई बोला।

पाँचों भाई अपनी-अपनी बंदूक लेकर उस रास्ते पर चल पड़े। रास्ता बहुत लंबा था। वे चलते रहे, चलते रहे। अंततः वे उस जगह पहुँच गए जिस जगह उनके पिता की हड्डियाँ बिखरी थीं और बंदूक रखी थी।

सबसे बड़े भाई ने कहा—''मैं इन हड्डियों को ठीक जगह पर लगा सकता हूँ।''

यह कहकर उसने ओगालुस्सा की हड्डियों को जोड़ दिया।

इसके बाद दूसरे भाई ने कहा—''मैं इन हड्डियों में मांस भर सकता हूँ।''

उसने ओगालुस्सा की हड्डियों पर मांस चढ़ा दिया।

तीसरा भाई उस शरीर में खून डाल सकता था। उसने वैसा कर भी दिया।

चौथे भाई ने कहा—''मैं उनके शरीर में साँस डाल सकता हूँ।''

ओगालुस्सा के शरीर ने साँस लेना शुरू कर दिया।

तब जाकर पाँचवाँ बोला—''मैं इन्हें खड़ा कर सकता हूँ।''

पाँचवें ने ओगालुस्सा को खड़ा कर दिया।

खड़े होकर ओगालुस्सा ने अपनी आँखें खोलीं और पूछा—''मेरी बंदूक कहाँ है?''

लड़कों ने ओगालुस्सा को उसकी पुरानी बंदूक दे दी। तब सभी अपने घर वापस आ गए। घर आकर ओगालुस्सा नहाया-धोया। मृत्युलोक से वापस आने की वजह से अपने बाल कटवाए। खाना खाया और आराम करने लगा।

ओगालुस्सा के परिवारवाले काफी खुश थे। उसके पड़ोसी भी खुश थे। ओगालुस्सा ने अपने पड़ोसियों को दावत पर बुलाया। मांस बनाया गया।

ओगालुस्सा ने जानवर की पूँछ से एक खूबसूरत चाबुक बनाया और मनकों से उसे सजाया।

दावत शुरू हो गई। लोग अच्छे-अच्छे कपड़े पहनकर आए। साजिंदे साज बजाने लगे, लोग नाचने-गाने लगे। सभी बहुत खुश थे।

ओगालुस्सा ने अपने अतिथियों को वह सुंदर चाबुक दिखलाया। अतिथियों ने तारीफ करते हुए कहा—"इतना सुंदर चाबुक हमने आज तक नहीं देखा था।"

कई लोग ओगालुस्सा से वह चाबुक माँगने लगे लेकिन उसने किसी को वह चाबुक नहीं दिया। सबको शांत कराकर वह बोलने लगा—"बहुत समय पहले मैं शिकार करने जंगल गया था। एक ताकतवर शेर ने मुझे मार दिया। बहुत समय तक मैं मरा ही रहा। तब मेरे बेटों ने मेरी हड्डियों को ढूँढ़ा और मुझे फिर से जिंदा किया। अब मैं आपलोगों के सामने हूँ। मैं अपने बेटों का बहुत आभारी हूँ। मैं अपना यह चाबुक इन बेटों को देना चाहता हूँ। लेकिन चूँकि मेरे पास एक ही चाबुक है, मैं इसे एक बेटे को ही दे सकता हूँ। मैं चाहता हूँ कि इसे मैं उस बेटे को दूँ जिसने मुझे मृत्युलोक से वापस लाने में सबसे बड़ी भूमिका निभाई है। ...आप बताएँ कि यह चाबुक किसे दिया जाना चाहिए?"

लोग सोच-विचार करने लगे। लेकिन इस बात का निर्णय करना इतना आसान नहीं था। अंततः ओगालुस्सा ने ही कहा—"मैं यह चाबुक नन्हें पुली को दूँगा। उसने मुँह खोलते ही सबसे पहले पूछा—'मेरे पिता कहाँ हैं?' उसके पूछने पर ही मेरे बाकी बेटे मुझे ढूँढ़ने गए, मुझे ढूँढ़कर ले आए। अपने बेटों को मैं धन्यवाद देता हूँ। लेकिन यह पुली ही है जिसकी वजह से मैं आपके और अपने परिवार के बीच वापस आ सका।"

यह कहकर ओगालुस्सा ने पुली को चूम लिया। सभी लोग कह उठे—"ओगालुस्सा! आप बिलकुल सही कह रहे हैं।"

आज भी अफ्रीकी लोग कहा करते हैं—"कोई आदमी तब तक जिंदा रहता है जब तक आप उसे याद करते हैं!"

पानी के कारण

उन दिनों चाँद और सूरज धरती पर ही रहा करते थे। पानी से उनकी बड़ी मित्रता थी। वे अकसर पानी के घर उससे मिलने आया करते थे। लेकिन पानी कभी चाँद-सूरज के घर नहीं जाता था। सूरज को इस बात से दुख होता था। एक दिन सूरज ने पानी से पूछा—''तुम मेरे घर क्यों नहीं आते हो दोस्त?''

पानी ने कहा—''देखो, तुम्हारा घर छोटा है। मेरे अंदर बहुत-सी मछलियाँ, मगरमच्छ वगैरह रहते हैं। अगर मैं इनके साथ तुम्हारे घर आया तो वहाँ बैठने को भी जगह नहीं मिलेगी।''

सूरज ने कहा—''मैं एक बहुत बड़ा घर बनाऊँगा। तुम मेरे घर जरूर आना।''

सूरज ने अपने लिए एक बहुत बड़ा घर बना लिया। तब पानी अपने दल-बल के साथ उसके घर गया। कुछ ही देर में सूरज के घर में घुटने भर पानी जमा हो गया। और थोड़ी देर में पानी चाँद-सूरज के गले तक पहुँच गया। चाँद-सूरज छत पर चले गए। पानी वहाँ भी पहुँच गया। चाँद-सूरज ऊपर उठकर आकाश में चले गए। यह जगह उन्हें सुरक्षित लगी। तब से वे वहीं रहने लगे।



मगरमच्छ की बहन

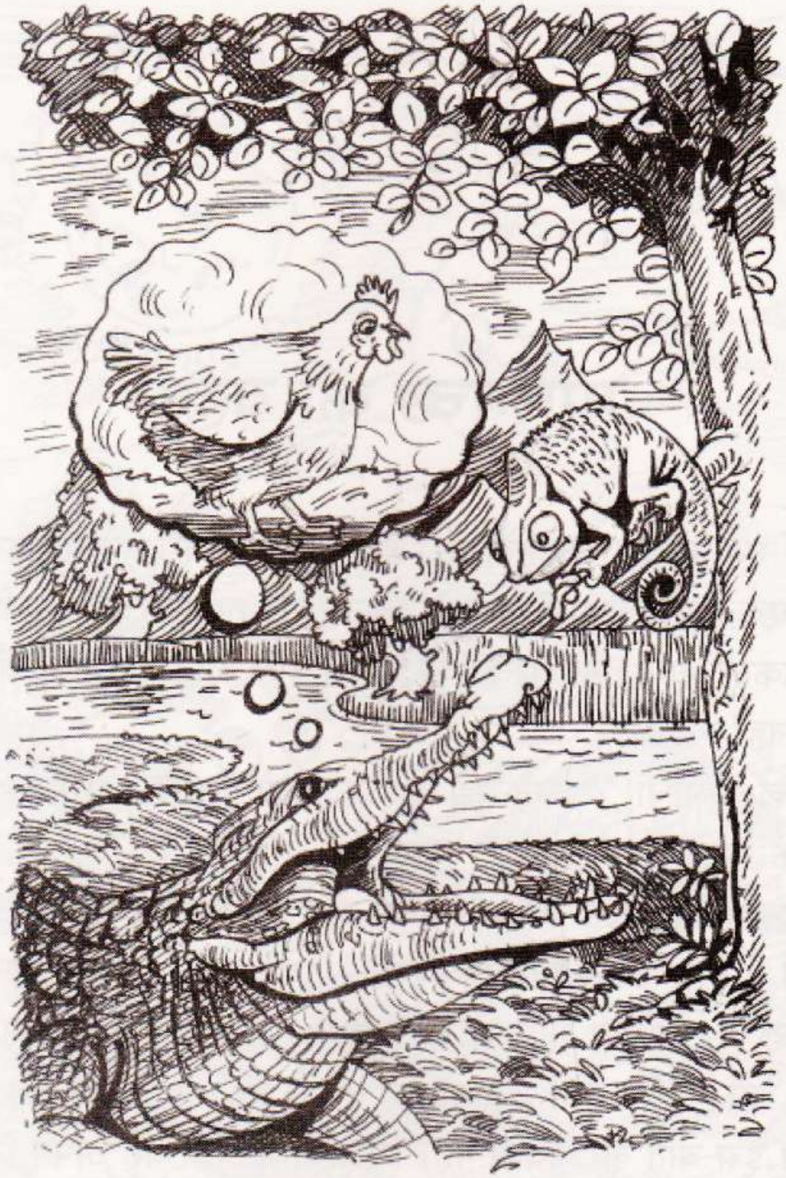
एक नदी में एक मगरमच्छ रहता था। वह दूसरे जानवरों को मारकर अपना पेट भरता था। एक बार एक मुर्गी नदी के किनारे गई। मगरमच्छ उसको खाने पानी से बाहर निकल आया। मगरमच्छ को अपनी ओर आते देख मुर्गी बोली—''मेरे भाई ! मुझे नहीं खाना !''

मगरमच्छ ने सोचा, ''इसने मुझे भाई कहा तो मैं इसे कैसे खा सकता हूँ ?'' वह पानी के अंदर चला गया।

दूसरे दिन मुर्गी फिर से नदी के किनारे आई और मगरमच्छ ने फिर उसे खाना चाहा। मुर्गी ने फिर उससे निवेदन किया—''मेरे भाई ! मुझे नहीं खाना !''

मगरमच्छ ने उस दिन भी उसे छोड़ दिया। लेकिन एक बात उसकी समझ में नहीं आ रही थी कि मुर्गी उसकी बहन कैसे हो सकती है ? वह सोचता रहा लेकिन उसे इस बात का जवाब नहीं मिल पाया। तब वह अपने मित्र गिरगिट के पास चला गया। उसने गिरगिट से अपनी समस्या बताई। गिरगिट बोला—''देखो, मुर्गी हो या कछुआ, गिरगिट हो या मगरमच्छ, सभी अंडे देते हैं। देते हैं न ?''

मगरमच्छ बोला—''हाँ !''



"तब हम सभी भाई–बहन हुए? या नहीं?" गिरगिट ने फिर पूछा।
"हाँ, हाँ, हम सभी भाई–बहन हुए! मुर्गी भी मेरी बहन हो गई!"
मगरमच्छ यह बात समझ गया था। तभी तो वह कभी मुर्गियों को नहीं खाता!

खरगोश की पूँछ

बहुत समय पहले जानवरों को पूँछ नहीं हुआ करती थी। होती भी थी तो बहुत छोटी। एक दिन जानवरों के राजा शेर ने सभी जानवरों को बढ़िया पूँछ देने का निर्णय लिया। उसने सभी जानवरों को अपने पास बुलाया। सभी जानवर पूँछ लेने जाने लगे। लेकिन छोटी पूँछ होने के बावजूद खरगोश बढ़िया पूँछ लेने नहीं जा रहा था। दरअसल उस दिन काफी ठंड थी। वर्षा भी हो रही थी। उसने दूसरे जानवरों से कहा—''तुमलोग मेरे लिए भी एक पूँछ माँगकर ले आना? वर्षा में निकलना मुझे बहुत बुरा लगता है।''

जानवरों ने उससे पूछा, ''तुम्हारे लिए कैसी पूँछ ले आएँ?''

खरगोश ने निश्चिंत भाव से जवाब दिया, ''जैसी मर्जी ले आना। सब चलेगा। बस इतना ध्यान रखना कि पूँछ बहुत ज्यादा लंबी न हो, न ही बहुत ज्यादा छोटी हो।''

थोड़े समय बाद सभी जानवर अपने लिए सुंदर पूँछ लेकर आ गए। मगर कोई खरगोश के लिए पूँछ लेकर नहीं आया। हो सकता है कुछ जानवर भूल गए होंगे, कुछ के पास समय नहीं होगा और कुछ उसके लिए बढ़िया पूँछ नहीं पा सके होंगे।



दूसरों पर अपना काम छोड़ने से ऐसा ही होता है। इसीलिए किसी को किसी से अपना काम करने के लिए नहीं कहना चाहिए। ऐसा करने से पहले खरगोश की छोटी पूँछ को जरूर याद कर लेना चाहिए।

दंत कथा किसी समाज की वाचिक परंपरा की धरोहर होती है। इसमें लोक-ज्ञान, लोक-स्मृति और लोक-विश्वास का सार निहित रहता है। समाज इस साझी धरोहर में अपना प्रतिबिंब, अपनी पहचान पाता है। दंत कथाओं में मनुष्य और अन्य प्राणियों के बीच संवाद अथवा संबंध विभिन्न रूपों में प्रकट होता है कभी प्रत्यक्ष संवाद के माध्यम से तो कभी संदेश के रूप में। प्रस्तुत संग्रह में संजीव ठाकुर ने अफ्रीकी दंत कथाओं को एकत्र किया है। पशु-पक्षियों के माध्यम से कही इन कथाओं में मनुष्य के लिए भी तरह-तरह की सीख निहित है।



संजीव ठाकुर

जन्म : 29 जनवरी, 1967, मुँगेर (बिहार)।

शिक्षा : एम.ए, एम.फिल., पी-एच.डी (दिल्ली विश्वविद्यालय)।

प्रकाशन : नौटंकी जा रही है, फ्रीलांस जिंदगी, अब आप अली अनवर से..., प्रेम संबंधों की कहानियाँ (कहानी-संग्रह); झौआ बैहार (लघु उपन्यास); इस साज पर गाया नहीं जाता (कविता-संग्रह); संगीत के पाँच सितारे (जीवनी); मैं भी गीत लिखूँगा, नभ में आया इंद्रधनुष, कबूतरी आंटी, यहाँ ऐसा वहाँ वैसा, चुन्नू-मुन्नू का स्कूल, बड़ों का बचपन, बचपन की बातें आदि (बाल-साहित्य)।

संप्रति : टी.एन.बी. कॉलेज, भागलपुर में करीब आठ साल अध्यापन के बाद इन दिनों स्वतंत्र लेखन एवं पत्रकारिता।

संपर्क : एस एफ-22, सिद्ध विनायक अपार्टमेंट, अभय खंड-3, इंदिरापुरम, गाजियाबाद (उ.प्र.)।

फोन : 0120-4116718

ई मेल : skthakur67@gmail.com

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

ISBN 978-93-88359-19-1

₹ 80/-